

'अनुमान' की प्रमाणिकता का खंडन-

(अनुमान 2 शब्दों के योग से बना

है - अनु + मान। यहाँ अनु का आशय है - 'पश्चात्' और मान का

लात्पर्य है - 'ज्ञान'। अर्थात्) अनुमान का शाब्दिक अर्थ है - पश्चात् ज्ञान।

अर्थात् पूर्व ज्ञान के पश्चात् और उसी पर आधारित होकर होने वाला

ज्ञान ही अनुमान है। उदाहरण स्वरूप - घूम रुपी हंतु को देख कर अग्नि

रुपी साध्य का ज्ञान ही अनुमान है। इस अनुमान का तार्किक आधार

स्व प्राण व्याप्ति है। व्याप्ति का शाब्दिक अर्थ है - विशेष संबंध। हेतु ४

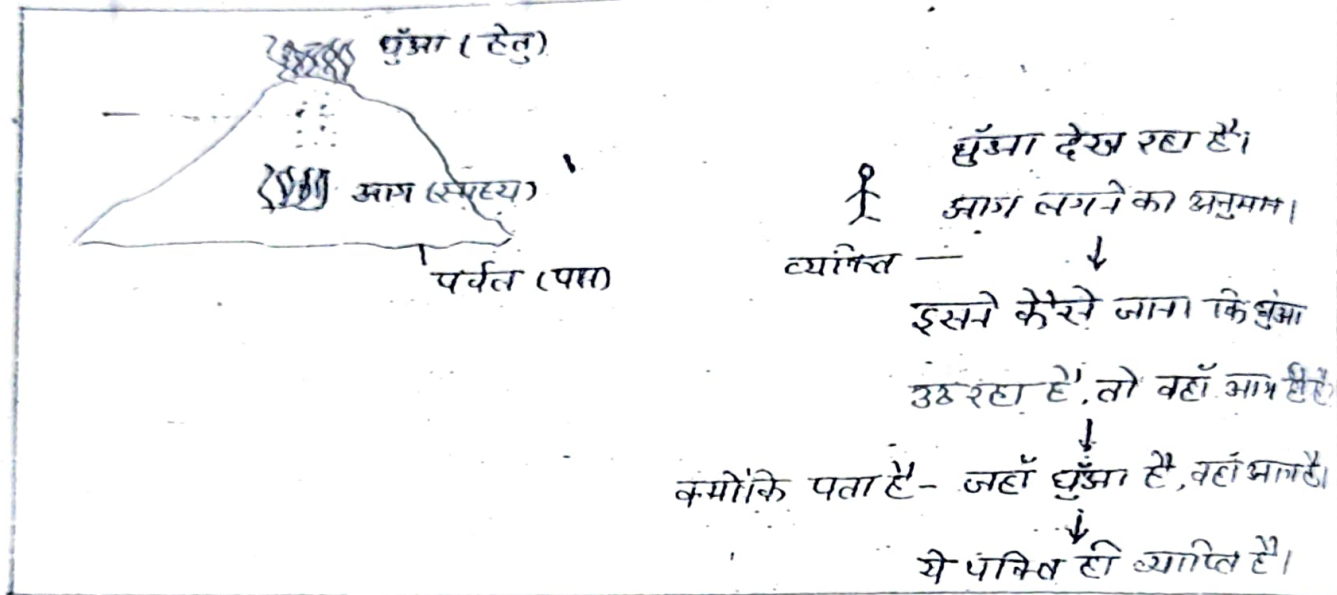
साध्य के मध्य का नियत, साहचर्य, सार्वभौम, अनौपाधिक (शर्त रहित)

स्व अव्याभिचारी संबंध ही व्याप्ति है। उदाहरण स्वरूप - पुरु को देख कर

मान का अनुमान करने के क्रम में यह वाक्य की 'जहाँ-२' चुड़ा है, वहाँ

आग है, व्याप्ति वाक्य है। -

चार्वाक मतानुसार अनुमान को प्रमाण तभी माना जा सकता है, जब व्याप्ति संबंध की निश्चयात्मक रूप से सिद्धि हो जाय, यही इस व्याप्ति संबंध की सिद्धि निश्चयात्मक रूप से किसी भी प्रकार से नहीं की जा सकती। चार्वाक इसके लिए निम्न तर्क देते हैं-



* नियत - हमेशा, सादृश्य - साथ-2, सार्वभौम - सर्वत्र, अव्याभिचारि - ह्मोतेक सम्बन्ध, अनोपपत्तिक - शर्त रहित।

1. व्याप्ति की सिद्धि प्रत्यक्ष से नहीं-

चार्वाक मतानुसार व्याप्ति की स्थापना प्रत्यक्ष से नहीं की जा सकती। प्रत्यक्ष का क्षेत्र सीमित है। हम घुंर से घुंर पर्वत को देखकर वहाँ आग की निश्चयात्मक रूप से स्थापना नहीं कर सकते हैं जब तक हमारा घुंर के साथ धुंआ विद्यमान हो। परन्तु धुंआ आग की बात को भी हो जाय तो हम वर्तमान में भी धुंआ आग का साधन नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति में हम आग का भी साधन नहीं कर सकते। इसके अर्थ सार्वभौम संबंध की स्थापना नहीं की जा सकती।

यना निश्चयात्मक रूप से नहीं कर सकते। यदि कुछ के आधार पर सार्वभौम निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया गया तो वहाँ सर्वत्र सा-
मर्थ्यकरण का दोष उत्पन्न हो जाता है।

2. व्याप्ति की सिद्धि अनुमान से भी नहीं-

व्याप्ति की सिद्धि अनुमान से भी नहीं की जा सकती। यदि ऐसा किया गया तो 2 प्रकार के दोष उत्पन्न हो सकते हैं-

(i) चक्रक दोष

(ii) अनवस्था दोष



अनुमान व्याप्ति पर आधारित है। अब यदि इस व्याप्ति की सिद्धि अनुमान के आधार पर की जाय तो वहाँ चक्रक दोष की उत्पत्ति हो जाती है। यहाँ अनवस्था दोष भी है। एक अनुमान की सिद्धि के लिए हमें दूसरे अनुमान की आधारभूत व्याप्ति की मदद लेनी पड़ेगी और पुनः उस व्याप्ति की सिद्धि के लिए तीसरे अनुमान का सहारा लेना पड़ेगा। इस प्रकार इस क्रम में यहाँ अनवस्था दोष की उत्पत्ति हो जाती है।

* चक्रक दोष-

एक की सिद्धि दूसरे के आधार पर तथा दूसरे की सिद्धि पहले के आधार पर हो तो वहाँ चक्रक दोष होता है।

* अनवस्था दोष-

अनन्त तक जाने की कोशिश स्थिति।

(अनुमान
↓
व्याप्ति)

अनुमान

↓
व्याप्ति → अनुमान

↓
व्याप्ति → अनुमान